*Anil Kumar Pandey*

# How to Determine Grammatical Gender in Hindi

*अनिल कुमार पाण्डेय*

# हिंदी में लिंग निर्धारण[1]

**Abstract** Hindi has two grammatical genders: masculine and feminine. Students of Hindi, especially those who learn it as a second language, have difficulties in determining the nouns' gender. This creates syntactic problems in constructing and comprehending sentences. Nominal suffixes—both inflexional and derivational—may serve as a criterium in determining the noun gender and thus help to a certain extent to solve this problem. The present article approaches this issue from a pragmatic perspective. It provides a broad overview of the Hindi nominal suffixes to be used by Hindi learners and in the classroom.

**Keywords** nominal gender, determining the gender, inflexional suffixes, derivational, suffixes, lexical semantics, learners of Hindi as a second language.

**सारांश** हिंदी में दो ही लिंग हैं – पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। हिंदी सीखने वाले ग़ैर-हिंदी भाषियों, भारतीय एवं विदेशियों के लिए संज्ञाओं का लिंग निर्धारित करना कठिन होता है। यह कठिनाई वाक्यविन्यास में समस्या पैदा करती है। हिंदी में काफ़ी प्रत्ययों के आधार पर लिंग का निर्धारण किया जा सकता है चाहे वे रूपसाधक (Inflectional) हों अथवा व्युत्पादक (Derivational)। हिंदी में लिंग निर्धारण संबंधी समस्याओं को इन प्रत्ययों के आधार पर कुछ हद तक दूर किया जा सकता है। प्रस्तुत आलेख के द्वारा व्यावहारिक रूप से इस समस्या का समाधान ढूँढ़ने का प्रयास किया गया है।

**मुख्य शब्द** – संज्ञाओं का लिंग, लिंग का निर्धारण, रूपसाधक प्रत्यय, व्युत्पादक प्रत्यय, शब्दार्थ, हिंदी, सीखनेवाले हिंदीतर भाषी।

1 प्रस्तुत आलेख "हिंदी में प्रत्यय विचार (लिंग निर्धारण के विशेष संदर्भ में)" (पाण्डेय 2010) आलेख का संवर्धित–परिवर्धित किया हुआ नया संस्करण है।

Published in: Tatiana Oranskaia, Anvita Abbi (eds.): *The Heart of Change. Issues on Variation in Hindi.* Heidelberg: HASP, 2022.
DOI: https://doi.org/10.11588/hasp.919.c12626

## १ परिचय

अधिकांश भारतीय-आर्य भाषाओं में तीन लिंग होते हैं परंतु हिंदी में दो ही लिंग हैं, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। हिंदीतर भाषियों की हिंदी सीखते समय एक बड़ी समस्या है कि किन शब्दों को स्त्रीलिंग कहें, किन शब्दों को पुल्लिंग और इसका आधार क्या है? इस संदर्भ में प्रसिद्ध वैयाकरणों ने भी अपनी विवशता प्रकट की है। हिंदी के मूर्धन्य वैयाकरण कामता प्रसाद गुरु के शब्दों में निम्नलिखित कथन उद्धृत है, "हिंदी में अप्राणिवाचक शब्दों का लिंग जानना विशेष कठिन है; क्योंकि यह बात अधिकांश व्यवहार के अधीन है। अर्थ और रूप दोनों ही साधनों से इन शब्दों के लिंग जानने में कठिनाई होती है।" (गुरु 1920: 162)।

समस्याएँ अधिकतर वहाँ आती हैं जहाँ निर्जीव अथवा अमूर्त शब्दों के लिंग का निर्धारण करना हो। इसके अलावा मानव अथवा पशु-पक्षियों के लिंग निर्धारण की जब बात हो तो वहाँ भी समस्याएँ खासकर अहिंदी भाषी के लिए आती हैं। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य है कि अहिंदी भाषी शिक्षार्थियों के साथ हिंदी भाषी शिक्षार्थियों के लिए लिंग निर्धारण के कुछ व्यावहारिक पक्ष प्रस्तुत किए जाएँ जिससे कुछ हद तक उस संदर्भ में आने वाली समस्याओं से छुटकारा मिल सके।

हिंदी में लिंग का निर्धारण कुछ हद तक प्रत्ययों के आधार पर किया जा सकता है। ये प्रत्यय रूपसाधक (Inflectional) एवं व्युत्पादक (Derivational) हैं। इन्हीं दोनों प्रकार के प्रत्ययों के आधार पर लिंग का निर्धारण किया जा सकता है। जब किसी शब्द में कोई व्युत्पादक प्रत्यय जुड़ता है तो मूल शब्द संज्ञा, विशेषण अथवा कृदंत होते हैं। यदि संज्ञा शब्द है तो वह स्त्रीलिंग होगा अथवा पुल्लिंग। विशेषण शब्दों का अपना कोई लिंग नहीं होता। जिन संज्ञा शब्दों की वे विशेषता बताते हैं, उन्हीं संज्ञा शब्द के साथ उनकी अन्विति होती है।

## २ हिंदी में लिंग के सूचक

### २.१ आर्थी लिंग

वाक्यगत संरचनाओं में लिंग का अपना महत्व होता है। अधिकांश भारतीय-आर्य भाषाओं में वाक्यविन्यासीय स्तर पर लिंग का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। प्रत्येक भाषा में लिंगों की संख्या भिन्न-भिन्न हैं। अब सवाल यह है कि संज्ञा को लिंग की कौनसी उपकोटि—स्त्रीलिंग या पुल्लिंग—में रखा गया है। उसका अपना कोई सिद्धांत भी नहीं है कि अमुक सिद्धांत के आधार पर इन्हें अलग- अलग रखा जा सके। सजीव शब्दों का तो लिंग निर्धारण आसानी से शब्दार्थ के आधार पर ही किया जा सकता है, जैसे: *पुरुष – महिला, माता – पिता, गाय – बैल*, परंतु लिंग अक्सर शब्द-रूप से भी स्पष्ट होता है, जैसे: *राजा – रानी, हाथी – हथिनी, घोड़ा – घोड़ी* आदि (हर जोड़े में पहले पुल्लिंग शब्द आता है)। हिंदी में पशु, पक्षी व कीटवाचक कुछ संज्ञा शब्दों को पुल्लिंग व कुछ स्त्रीलिंग की कोटि में रखा गया है जैसे – पुल्लिंग: *कौआ, खटमल, सारस, चीता, उल्लू, केंचुआ, भेड़िया* आदि। स्त्रीलिंग: *कोयल, छिपकली, लोमड़ी, दीमक, चील, मैना, गिलहरी, तितली, मक्खी* आदि।

पुरुषवाचक एवं निश्चयवाचक सर्वनामों में लिंग का निर्धारण संदर्भ से किया जाता है – *वह, यह, हम, मैं, तुम, आप* आदि। उदाहरण के लिए: *वह आ रहा है; वह आ रही है। मैं आ रहा हूँ; मैं आ रही हूँ। तुम कब आओगे; तुम कब आओगी?* यहाँ व्याकरणिक संदर्भ से निर्धारित किया जा सकता है कि आने वाला पुल्लिंग है अथवा स्त्रीलिंग, यह क्रिया में प्रतिबिंबित होता है। इसी

तरह—*वह लड़का है; वह लड़की है*—जैसे वाक्यों में लिंग विधेय में द्रष्टव्य है। अब ये उदाहरण देखिए: *तुम आ जाओ। आप कौन हैं?* इन उदाहरणों में लिंग का कोई व्याकरणिक सूचक नहीं है। कर्ता का लिंग अधिभाषिक संदर्भ से ही पहचाना जा सकता है। इन सभी उदाहरणों में सर्वनामों का प्रयोग दोनों लिंगों में किया जा सकता है परंतु इनके स्थान पर यदि संज्ञा शब्द का प्रयोग करेंगे तब वहाँ पुरूषवाची संज्ञा व स्त्रीवाची संज्ञा का प्रयोग होगा एवं उसके कारण क्रिया का प्रयोग भी स्त्रीवाची और पुरुषवाची के रूप में किया जाएगा। जैसे: *लड़का आ रहा है* (पुल्लिंग); *लड़की आ रही है* (स्त्रीलिंग)।

सजीव शब्दों में भी कुछ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है जो पुरुष व स्त्री दोनों के वाचक होते हैं परंतु उन्हें या तो पुल्लिंग की कोटि में रखा गया है अथवा स्त्रीलिंग की कोटि में, जैसे:

पुल्लिंग: *मनुष्य, मानव, पशु, अभिभावक, समाज, पक्षी, विद्यार्थी* ।
स्त्रीलिंग: *संतान, भीड़, औलाद, चिड़िया, मक्खी* ।

पशु वर्ग में अधिकांश शब्द के पुल्लिंग व स्त्रीलिंग रूप मिलते हैं यथा: *घोड़ा – घोड़ी, हाथी – हथिनी, ऊँट – ऊँटनी, कुत्ता – कुतिया, बाघ – बाघिन, शेर – शेरनी* आदि। कभी-कभी पशु का लिंग अलग-अलग शब्द प्रकट करते हैं, जैसे: *गाय – बैल* ।

## २.२ व्याकरणिक लिंग के सूचक – प्रत्यय

लिंग अधिकतर प्रत्ययों से स्पष्ट होता है। पहले रूपसाधक (Inflectional) प्रत्यय देखें, जो संज्ञाओं के रूप निर्धारण में उपकारी होते हैं, इसके बाद व्युत्पादक (Derivational)।

**नोट:** सामासिक शब्द के द्वितीय घटक के आधार पर ही समस्त पद का लिंग निर्धारण होता है। यदि द्वितीय घटक स्त्रीलिंग है तो समस्तपद स्त्रीलिंग होगा, इसके विपरीत पुल्लिंग। उदाहरणतः

*– सहन* (पु॰) + *शक्ति* (स्त्री॰) = *सहनशक्ति* (स्त्री॰), *मनः* (पु॰) + *स्थिति* (स्त्री॰ ) = *मनः स्थिति* (स्त्री॰);

*भू* (स्त्री॰) + *विज्ञान* (पु॰) = *भूविज्ञान* (पु॰), *प्रीति* (स्त्री॰) + *भोज* (पु॰) = *प्रीतिभोज* (पु॰)।

### २.२.१ रूपसाधक प्रत्यय

हिंदी में पाँच रूपसाधक प्रत्यय सुस्पष्ट लिंग-सूचक हैं। ये प्रत्यक्ष रूप बहुवचन प्रत्यय *-एँ, -याँ* (*-(य)आँ*)[2], *-ए* एवं *शून्य* (*-Ø*)[3] तथा तिर्यक रूप एकवचन प्रत्यय *-ए*[4] होते हैं। बहुवचन प्रत्ययों में *-एँ, -याँ* प्रत्यय स्त्रीवाची प्रत्यय हैं। ये जिस किसी शब्द में जुड़ते हैं, वे सभी शब्द स्त्रीलिंग होते

2 प्रत्यय है *-आँ* । ई- एवं इ-कारांत स्त्रीलिंग शब्दों में *-आँ* जुड़ने से उत्पन्न *-य* प्रातिपदिक में शामिल है। सुविधा के लिए नीचे प्रत्यय के रूप में *-याँ* लिखा जाता है।

3 *शून्य* प्रत्यय को "शून्य विभक्ति" (Zero Morph) कहा गया है।

4 ये दो समस्वन रूपिम हैं।

हैं तथा -*ए* एवं *शून्य* प्रत्यय जिस शब्द के साथ जुड़ते हैं, वे पुलिंग होते हैं। यहाँ *शून्य* से तात्पर्य है, प्रत्यय रहित। जिन शब्द रूपों में आकार ध्वन्यात्मक तौर पर अभिव्यक्त नहीं होता है या फिर व्यंजन में अंत होता है वहाँ *शून्य* प्रत्यय माना जाता है जैसे कि 'घर [-*Ø*]'। एकवचन में *शून्य* प्रत्यय वाले शब्द स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग हो सकते हैं। परंतु -*ए* प्रत्यय वाले शब्द सिर्फ पुल्लिंग होते हैं।

नीचे तालिकाओं १, २, ३ व ४ में बहुवचन संज्ञाओं में लगे इन प्रत्ययों के उदाहरण द्रष्टव्य हैं।

तालिका १ व्यंजनांत, आकारांत एवं ऊकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के बहुवचन

| एकवचन शब्द | प्रत्यय -*एँ* | बहुवचन शब्द | लिंग |
|---|---|---|---|
| *मेज़* | +*एँ* | *मेज़ें* | स्त्रीलिंग |
| *पुस्तक* | +*एँ* | *पुस्तकें* | स्त्रीलिंग |
| *सीमा* | +*एँ* | *सीमाएँ* | स्त्रीलिंग |
| *कथा* | +*एँ* | *कथाएँ* | स्त्रीलिंग |
| *बहू* | +*एँ* | *बहुएँ* | स्त्रीलिंग |

इसी संरचना के कुछ और स्त्रीलिंग संज्ञाओं के उदाहरण हैं:
*आदतें, सड़कें, क्रियाएँ, भावनाएँ, दिशाएँ, पत्रिकाएँ, रेखाएँ, संरचनाएँ, वासनाएँ, आशाएँ* आदि।

तालिका २ ईकारांत स्त्रीलिंग संज्ञाओं के बहुवचन

| एकवचन शब्द | प्रत्यय -*याँ* (-*आँ*) | बहुवचन शब्द | लिंग |
|---|---|---|---|
| *कुर्सी* | +*याँ* | *कुर्सियाँ* | स्त्रीलिंग |
| *लकड़ी* | +*याँ* | *लकड़ियाँ* | स्त्रीलिंग |
| *बकरी* | +*याँ* | *बकरियाँ* | स्त्रीलिंग |
| *सवारी* | +*याँ* | *सवारियाँ* | स्त्रीलिंग |
| *चुनौती* | +*याँ* | *चुनौतियाँ* | स्त्रीलिंग |
| *गाड़ी* | +*याँ* | *गाड़ियाँ* | स्त्रीलिंग |

ईकारांत शब्दों के बहुवचन रूप के कुछ उदाहरण और दिए जा रहे हैं। जैसे:
*परी – परियाँ*, *कमी – कमियाँ* आदि।

तालिका ३ आकारांत पुल्लिंग संज्ञाओं के बहुवचन

| एकवचन शब्द | प्रत्यय -*ए* | बहुवचन शब्द | लिंग |
|---|---|---|---|
| *फोड़ा* | +*ए* | *फोड़े* | पुल्लिंग |
| *लड़का* | +*ए* | *लड़के* | पुल्लिंग |
| *कपड़ा* | +*ए* | *कपड़े* | पुल्लिंग |
| *दरवाज़ा* | +*ए* | *दरवाज़े* | पुल्लिंग |
| *हादसा* | +*ए* | *हादसे* | पुल्लिंग |

तालिका ४ व्यंजनांत पुल्लिंग संज्ञाओं के बहुवचन – शून्य प्रत्यय (*-Ø*)

| एकवचन शब्द | प्रत्यय *शून्य -Ø* | बहुवचन शब्द | लिंग |
|---|---|---|---|
| *प्रेम* | *+Ø* | *प्रेम* | पुल्लिंग |
| *प्यार* | *+Ø* | *प्यार* | पुल्लिंग |
| *घर* | *+Ø* | *घर* | पुल्लिंग |
| *समाज* | *+Ø* | *समाज* | पुल्लिंग |
| *ग्रंथ* | *+Ø* | *ग्रंथ* | पुल्लिंग |

हिंदी में किसी शब्द के वचन के स्तर पर परिवर्तन करने पर जो परिवर्तन होते हैं, वे प्रत्यय के स्तर पर ही होते हैं। ऐसे प्रत्यय को भाषावैज्ञानिक दृष्टि से बद्धरूपिम (Bound Morpheme) की संज्ञा दी गई है।

उपर्युक्त उदाहरणों में शब्द के साथ *-ए, -(य)आँ, -एँ* तथा -शून्य बहुवचन प्रत्यय जुड़े हैं। बहुवचन प्रत्यय के भी दो रूप मिलते हैं। पहला रूप वह प्रत्यय जो शब्दों के बहुवचन रूप बनने पर प्रत्यक्ष रूप (Direct Form) में दिखे, जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों में दिया गया है। दूसरा रूप वह जो तिर्यक रूप (Oblique Form ) में दिखे, जैसे: *लड़कों* (*को*), *कुर्सियों* (*को*), *मेजों* (*को*), *समाजों* (*को*), *मनुष्यों* (*को*), *जानवरों* (*को*) आदि में *-ओं* प्रत्यय में। (यह रूप सामान्यतः परसर्गों से पहले आता है।) दोनों बहुवचन प्रत्ययों में व्याकरणिक दृष्टि से वाक्यगत जो अंतर है वह यह कि प्रत्यक्ष रूप के साथ कोई परसर्ग (विभक्ति चिह्न ) नहीं जुड़ता। हाँ, आकारांत शब्दों में *-ए* प्रत्यय जुड़ने से उनके बहुवचन रूप बनते हैं। परसर्ग (विभक्ति चिह्न) के जुड़ने पर *-ए* युक्त रूप बहुवचन न होकर तिर्यक एकवचन रूप होते हैं। उदाहरण के लिए:

*कुर्सियाँ टूट गईं।*
**कुर्सियाँ को ले आओ।* (अस्वाभाविक प्रयोग)
*मेजें मजबूत बनी हैं।* ( बहुवचन रूप)
**मेजें को कमरे में लगाओ।* (अस्वाभाविक प्रयोग)
*कपड़े फट गए।* ( बहुवचन रूप)
*कपड़े पर दाग है।* ( तिर्यक एकवचन रूप)
*लड़के खेल रहे हैं।* ( बहुवचन रूप)
*लड़के ने खेला है।* ( तिर्यक एकवचन रूप)

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि शब्द में प्रत्यक्ष रूप बहुवचन प्रत्यय लगने पर कोई परसर्ग नहीं लगेगा। आकारांत शब्दों में बहुवचन प्रत्यय *-ए* लगाने पर उसके साथ परसर्ग तो लग सकते हैं परंतु परसर्ग लगाने पर बहुवचन न होकर वे तिर्यक एकवचन रूप हो जाते हैं। पुल्लिंग आकारांत शब्दों में बहुवचन प्रत्यय *-ए* केवल जातिवाचक संबंधवाचक *(पापा, मामा, चाचा, राजा, काका* आदि) एवं संस्कृत कर्तृवाचक (*श्रोता, वक्ता* आदि) संज्ञाओं में नहीं लगता।

बहुवचन का तिर्यक रूप (Oblique Form)

जैसा कि ऊपर कहा गया है बहुवचन प्रत्यय का तिर्यक रूप सभी संज्ञाओं में *-ओं* है। अतः इसके आधार पर लिंग का निर्धारण करना असंभव है।

### २.२.२ व्युत्पादक प्रत्यय (Derivational Suffixes)

वे प्रत्यय जो किसी शब्द के साथ जुड़कर दूसरे शब्द निर्मित करते हैं उन्हें व्युत्पादक प्रत्यय कहते हैं। जैसे: सुंदर (विशेषण) + ता = सुंदरता (संज्ञा)।

प्रत्यय जुड़ने से मौलिक प्रातिपदिकों में रूपस्वनिमिक (morphophonological) परिवर्तन हो सकते हैं। आम तौर पर ऐसे परिवर्तन संस्कृत तत्सम तथा उन्हीं संरचनाओं के अनुसार बने नवसंस्कृत शब्दों की विशेषता होते हैं, परंतु हिंदी और दूसरे मूल (फ़ारसी, अरबी) शब्दों में भी आते हैं। यहाँ इन परिवर्तनों पर कोई विशेष टिप्पणी नहीं की जा रही है।

स्त्रीवाची प्रत्यय

-ता स्त्रीवाची प्रत्यय

तालिका ५ में कुछ स्त्रीवाची प्रत्ययों एवं उनसे बनने वाले शब्दों के उदाहरण दिए जा रहे हैं।

तालिका ५ -*ता* स्त्रीवाची प्रत्यय एवं भाववाचक संज्ञाएँ

| मूल शब्द | - *ता* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *मानव* | + *ता* | *मानवता* |
| *स्वतंत्र* | + *ता* | *स्वतंत्रता* |
| *पति* | + *ता* | *पतिता* |
| *महत्* | + *ता* | *महत्ता* |
| *लघु* | + *ता* | *लघुता* |
| *दुष्ट* | + *ता* | *दुष्टता* |
| *मम* | + *ता* | *ममता* |
| *आधुनिक* | + *ता* | *आधुनिकता* |

इसी नमूने पर निम्न संज्ञाएँ निर्मित हैं:

*दीर्घता, मूर्खता, मधुरता, कटुता, गुरुता, विशेषता, शूरता, जड़ता, एकरूपता, आत्मीयता* ।

इस तद्धित प्रत्यय के शब्द में जुड़ने से जो शब्द बनते हैं, वे भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द होते हैं।

- *ता* प्रत्यय जिन शब्दों में लगता है, वे शब्द बहुधा विशेषण पद होते हैं।

- *ता* प्रत्यय से कुछ समूहवाचक अथवा अन्य शब्द भी निर्मित होते हैं, जो स्त्रीलिंग ही होते हैं:

*जन + ता = जनता, कवि + ता = कविता*

- *इमा* स्त्रीवाची प्रत्यय

- *इमा* तद्धित प्रत्यय से युक्त सभी शब्द भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञाएँ होते हैं (देखिए तालिका ६)। उपर्युक्त प्रत्यय बहुधा विशेषण शब्दों में जुड़ता है।

तालिका ६ -*इमा* प्रत्यय एवं भाववाचक स्त्रीलिंग शब्द

| मूल शब्द | -*इमा* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *लाल* | + *इमा* | *लालिमा* |
| *काला* | + *इमा* | *कालिमा* |
| *रक्त* | + *इमा* | *रक्तिमा* |
| *लघु* | + *इमा* | *लघिमा* |

निम्न संज्ञाएँ भी इसी नमूने पर निर्मित हैं:
*नीलिमा, अरुणिमा, हरीतिमा, श्वेतिमा, धवलिमा, भंगिमा, महिमा, पूर्णिमा, मंदिमा, बंकिमा, म्लानिमा, मधुरिमा* ।

- *आवट* स्त्रीवाची प्रत्यय

- *आवट* प्रत्यय कृदंत प्रत्यय है। इस प्रत्यय से निर्मित शब्द भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञाएँ होते हैं (देखिए तालिका ७)।

तालिका ७ -*आवट* प्रत्यय एवं स्त्रीलिंग शब्द

| मूल शब्द | -*आवट* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *लिख* (ना) | + *आवट* | *लिखावट* |
| *रुक* (ना) | + *आवट* | *रुकावट* |
| *मिल* (ना) | + *आवट* | *मिलावट* |
| *गिर* (ना) | + *आवट* | *गिरावट* |

- *आवट* प्रत्यय लगे हुए कुछ और संज्ञा शब्द द्रष्टव्य हैं:
*थकावट, बनावट, बुनावट, सजावट, कसावट, खिंचावट, चुनावट, जमावट, फुलावट, फैलावट, दिखावट*।

- *आहट* स्त्रीवाची प्रत्यय

- *आहट* बहुधा कृदंत प्रत्यय है। इसके विशेषण व धातु या प्रातिपदिक के साथ जुड़ने से भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द बनते हैं (देखिए तालिके ८)। -*आहट* प्रत्यय से जो शब्द बनते हैं, वे अक्सर ध्वनि अनुकरणात्मक शब्द होते हैं।

तालिका ८ -*आहट* प्रत्यय एवं स्त्रीलिंग शब्द

| मूल शब्द | -(*आ*)*हट* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *कड़वा* | + *(आ)हट* | *कड़वाहट* |
| *चिकना* | + *(आ)हट* | *चिकनाहट* |
| *गरमा* | + *(आ)हट* | *गरमाहट* |
| *छटपटा* | + *(आ)हट* | *छटपटाहट* |
| *चिल्ला (-ना)* | + *(आ)हट* | *चिल्लाहट* |

इसी प्रकार के अन्य उदाहरण द्रष्टव्य हैं:
*अचकचाहट, उकसाहट, किचकिचाहट, खिसियाहट, गड़गड़ाहट, जगमगाहट, झुँझलाहट, तड़तड़ाहट, तुतलाहट, धकधकाहट, फुसफुसाहट, बिलबिलाहट, बौखलाहट, मिनमिनाहट, मुस्कुराहट, लड़खड़ाहट, सनसनाहट, सरसराहट* ।

-*अना* स्त्रीवाची प्रत्यय

इस कृदंत प्रत्यय से निर्मित शब्द भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञाएँ होते है। यथा:

*अर्च्+अना= अर्चना, अवहेल्+अना= अवहेलना, कल्प्+अना= कल्पना, घट्+अना= घटना, काम्+अना= कामना* ।

इसी प्रकार के संज्ञा शब्द देखिए, जैसे:

*आराधना, गर्जना, तर्जना, भावना, रचना, वर्जना, गणना, यातना, याचना, वेदना, सूचना, स्थापना, वंचना, तुलना, प्रेरणा, आदि*।

-*अना* प्रत्यय संस्कृत धातुओं में जुड़ता है। जिन संज्ञाओं में यह प्रत्यय लगा है, वे अधिकतर तत्सम शब्द होते हैं।

-*आ* स्त्रीवाची प्रत्यय

-*आ* कृदंत प्रत्यय है । इससे युक्त स्त्रीलिंग शब्द भाववाचक संज्ञाएँ होते हैं।

*कथ्+आ=कथा, चिंत्+आ = चिंता, पूज् +आ= पूजा, परीक्ष् +आ=परीक्षा, कृ+आ= क्रिया* ।

निम्न इसी प्रकार के संज्ञा शब्द द्रष्टव्य हैं, जैसे:

*सज्जा, चर्चा, उषा, प्रच्छा, बाधा, भाष्+आ= भाषा, भिक्षा, शोभा, रक्षा, सेवा, कुंठा, लज्जा, घृण्+आ= घृणा, प्रथा, व्यथा, कृपा, स्पृध्+आ= स्पर्धा आदि*।

-*ती* स्त्रीवाची प्रत्यय

यह प्रत्यय तद्धित और कृदंत दोनों रूपों में प्रयुक्त हो सकता है। इससे बनने वाले शब्द स्त्रीलिंग होते हैं (देखिए तालिका ९)।

तालिका ९ क्रिया से बने संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | -*ती* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *पाव/पा(ना)* | + *ती* | *पावती* |
| *चढ़(ना)* | + *ती* | *चढ़ती* |
| *गिन(ना)* | + *ती* | *गिनती* |
| *भर(ना)* | + *ती* | *भरती* |
| *बोल* | + *ती* | *बोलती* |
| *चल* | + *ती* | *चलती* |

-इ, -*ति* स्त्रीवाची प्रत्यय

-इ अथवा -*ति* प्रत्यय से युक्त भाववाचक शब्द स्त्रीलिंग होते हैं (देखिए तालिका १०)। परंतु ऐसे ही प्रत्ययों के साथ युक्त प्राणिवाचक शब्द पुल्लिंग होते हैं (नीचे भारतीय-आर्य पुरुषवाची प्रत्ययों के परिच्छेद में देखिए)। स्त्रीवाची -*ति* प्रत्यय कृदंत प्रत्यय है। वह संस्कृत क्रिया धातुओं के साथ संयुक्त होता है। स्त्रीवाची -इ प्रत्यय बहुधा कृदंत प्रत्यय परंतु तद्धित प्रत्यय के रूप में भी प्रयुक्त होता है ।

तालिका १० संस्कृत क्रिया धातुओं से बने स्त्रीलंग संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | *-ति* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) | मूल शब्द | -इ स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|---|---|---|
| *कृ* | *+ ति* | *कृति* | *कृष्* | *+इ* | *कृषि* |
| *प्री* | *+ ति* | *प्रीति* | *हन्* | *+इ* | *हानि* |
| *शक्* | *+ ति* | *शक्ति* | | | |
| *स्था* | *+ ति* | *स्थिति* | | | |
| *स्मृ* | *+ ति* | *स्मृति* | | | |

इसी प्रकार *-ति* प्रत्यय वाले संज्ञा शब्दों के और उदाहरण द्रष्टव्य हैं:
*जाति, दृष्टि, क्षति, ख्याति, भीति, भ्रान्ति, सृष्टि, श्रुति, नीति, दीप्ति, तृप्ति, भक्ति, क्रांति, नियुक्ति, जाति, ज्योति, शांति, गति, रीति* ।

*-आई* स्त्रीवाची प्रत्यय

*-आई* प्रत्यय कृदंत और तद्धित दोनों में प्रयुक्त होता है (देखिए तालिका ११)।

तालिका ११ विशेषण (ऊपर) एवं क्रिया मूल से (नीचे) बने भाववाचक संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | *- आई* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *सच्चा* | *+आई* | *सचाई,* |
| *ढीठ* | *+आई* | *ढिठाई* |
| *एका* | *+आई* | *एकाई / इकाई* |
| *रूखा* | *+आई* | *रुखाई* |
| *खट्टा* | *+आई* | *खटाई* |
| *लड़(-ना)* | *+आई* | *लड़ाई* |
| *पीट(-ना)* | *+आई* | *पिटाई* |

इसी प्रकार – *महँगाई, पढ़ाई, लिखाई, पिसाई, बुराई, चिकनाई, सिलाई, ठकुराई ,चराई, पंडिताई, कमाई* आदि।

-ई स्त्रीवाची प्रत्यय

*-ई* प्रत्यय कृदंत और तद्धित दोनों में प्रयुक्त होता है। ईकारांत भाववाचक शब्द स्त्रीलिंग ही होते हैं (देखिए तालिका १२)।

इस ग्रूप में भारतीय-आर्य एवं फ़ारसी-अरबी, यहाँ तक कि अंग्रेज़ी भी -ई प्रत्यय युक्त संज्ञाएँ हैं ।

तालिका १२ -ई प्रत्यय से बने स्त्रीलंग संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | -ई स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *सावधान* | + ई | *सावधानी* |
| *खेत* | + ई | *खेती* |
| *डॉक्टर* | + ई | *डॉक्टरी* |
| *गृहस्थ* | + ई | *गृहस्थी* |
| *जवान* | + ई | *जवानी* |
| *हँस(-ना)* | + ई | *हँसी* |
| *धमक* | + ई | *धमकी* |
| *दोस्त* | + ई | *दोस्ती* |
| *गरीब* | + ई | *गरीबी* |
| *जुदा* | + ई | *जुदाई* |
| *खुदा* | + ई | *खुदाई* |

इसी प्रकार: *अमीरी, चोरी, टोली, दलाली, फाँसी, बुद्धिमानी, बोली, बदी, मनमानी महाजनी, सुस्ती* आदि।

-*औती* स्त्रीवाची प्रत्यय

-*औती* बहुधा कृदंत प्रत्यय है, तद्धित के रूप में भी प्रयुक्त होता है। उससे भाववाचक स्त्रीलंग शब्द बनते हैं (देखिए तालिका १३)।

तालिका १३ -*औती* प्रत्यय से बने स्त्रीलिंग शब्द

| मूल शब्द | -*औती* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *बूढ़ा* | + *औती* | *बुढ़ौती* |
| *मन* | + *औती* | *मनौती* |
| *फिर(ना)* | + *औती* | *फिरौती* |
| *चुन(ना)* | + *औती* | *चुनौती* |
| *बाप* | + *औती* | *बपौती* |
| *कट(ना)* | + *औती* | *कटौती* |
| *चुक(ना)* | + *औती* | *चुकौती* |

-*आनी* स्त्रीवाची प्रत्यय

यह प्रत्यय सजीव पुल्लिंग शब्द में जुड़कर सजीव स्त्रीलिंग संज्ञा बनाता है (देखिए तालिका १४)।

तालिका १४ *-आनी* प्रत्यय से बने स्त्रीलिंग शब्द

| मूल शब्द ( पुल्लिंग मनुष्य संज्ञाएँ) | *-आनी* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (स्त्रीलिंग मनुष्य संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *पंडित* | *+आनी* | *पंडितानी* |
| *मास्टर* | *+आनी* | *मास्टरानी* |
| *जेठ* | *+आनी* | *जेठानी* |
| *चौधरी* | *+आनी* | *चौधरानी* |
| *नौकर* | *+आनी* | *नौकरानी* |
| *देवर* | *+आनी* | *देवरानी* |
| *मेहतर* | *+आनी* | *मेहतरानी* |

कुछ अपवाद हैं, जैसे *क्षत्र+आनी = क्षत्राणी* । इसमें *-आनी*/*-आणी* प्रत्यय समूहवाचक शब्द में लगा है।

*-इन* स्त्रीवाची प्रत्यय

यह प्रत्यय *-आनी* प्रत्यय की भाँति सजीव पुल्लिंग शब्दों में लगकर स्त्रीलिंग संज्ञाएँ बनाता है (देखिए तालिका १५)।

तालिका १५ *-इन* प्रत्यय से बने स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

| शब्द (सजीव पुल्लिंग संज्ञाएँ) | *-इन* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (सजीव स्त्रीलिंग संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *सुनार* | *+ इन* | *सुनारिन* |
| *नाती* | *+ इन* | *नातिन* |
| *लुहार* | *+ इन* | *लुहारिन* |
| *तेली* | *+ इन* | *तेलिन* |
| *अहीर* | *+ इन* | *अहिरिन* |
| *बाघ* | *+ इन* | *बाघिन* |
| *साँप* | *+ इन* | *साँपिन* |

*-शून्य*(*-Ø*) स्त्रीवाची प्रत्यय

यह कृदंत प्रत्यय है, जो क्रिया मूल में जुड़कर उसके समान रूप की भाववाचक संज्ञाएँ बनाता है (देखिए तालिका १६)।

तालिका १६ *-शून्य* प्रत्यय से बने स्त्रीलिंग भाववाचक संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | *-ना* प्रत्यय का लोप+ *-Ø* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *छूटना* | *Ø* | *छूट* |
| *चमकना* | *Ø* | *चमक* |

इस संरचना की पूरी व्युत्पत्ति प्रक्रिया नीचे देखिए: *-ना* पुरुषवाची एवं *-Ø* स्त्रीवाची प्रत्यय।

पुरुषवाची प्रत्यय

स्त्रीवाची प्रत्ययों की भाँति पुरुषवाची प्रत्ययों की संख्या अधिक है। नीचे कुछ पुरुषवाची प्रत्ययों के उदाहरण दिए गए हैं।

*-त्व* पुरुषवाची प्रत्यय
यह तद्धित प्रत्यय है। शब्दों में जुड़कर यह प्रत्यय भाववाचक पुल्लिंग संज्ञाएँ बनाता है (देखिए तालिका १७)

तालिका १७ संस्कृत *-त्व* प्रत्यय से बने संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | *-त्व* पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *मम* | + *त्व* | *ममत्व* |
| *ब्राह्मण* | + *त्व* | *ब्राह्मणत्व* |
| *बंधु* | + *त्व* | *बंधुत्व* |
| *एक* | + *त्व* | *एकत्व* |
| *मातृ* | + *त्व* | *मातृत्व* |
| *घन* | + *त्व* | *घनत्व* |
| *देव* | + *त्व* | *देवत्व* |
| *महत्* | + *त्व* | *महत्व* |

इसी प्रकार: *सतीत्व, स्त्रीत्व, राजत्व, पितृत्व, प्रभुत्व, चुंबकत्व, द्वित्व, अमरत्व, नेतृत्व, पुरुषत्व, लघुत्व* ।

*-अक* पुरुषवाची प्रत्यय
*-अक* कृदंत प्रत्यय है जो संस्कृत धातुओं के साथ संयुक्त होकर जातिवाचक—प्राणिवाचक व वस्तुवाचक—पुल्लिंग संज्ञा शब्द बनाता है (देखिए तालिका १८)।

तालिका १८ *-अक* प्रत्यय से बने जातिवाचक संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | *-अक* पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द जातिवाचकसंज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *आलुंच्* | + *अक* | *आलोचक* |
| *ग्रह्* | + *अक* | *ग्राहक* |
| *गै* | + *अक* | *गायक* |
| *दीप्* | + *अक* | *दीपक* |
| *दा* | + *अक* | *दायक* |
| *दृश्* | + *अक* | *दर्शक* |
| *पठ्* | + *अक* | *पाठक* |
| *सूच्* | + *अक* | *सूचक* |

इसी प्रकार: *जनक, चिंतक, तारक, दोहक, धावक, नाशक, प्रेषक, रक्षक, भक्षक, वेधक, वंचक, संचारक, वादक, संपादक, लेखक, साधक, द्योतक, याचक, वाचक* ।

-*अन* पुरुषवाची प्रत्यय
(देखिए तालिका १९)।

तालिका १९ -अन पुरुषवाची प्रत्यय से बने संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | -*अन* पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *हन्* | + *अन* | *हनन* |
| *पाल्* | + *अन* | *पालन* |
| *अंक्* | + *अन* | *अंकन* |
| *वच्* | + *अन* | *वचन* |
| *जीव्* | + *अन* | *जीवन* |
| *आकृष्* | + *अन* | *आकर्षण* |
| *मृ* | + *अन* | *मरण* |
| *शी* | + *अन* | *शयन* |
| *वृ* | + *अन* | *वरण* |

कुछ स्वनात्मक संदर्भों में -*अन* का -*अण* हो जाता है, जैसे: *मरण, आकर्षण* ।

-*आव* पुरुषवाची प्रत्यय यह एक कृदंत प्रत्यय है। इससे बनने वाले शब्द भाववाचक संज्ञाएँ होते हैं (देखिए तालिका २०)।

तालिका २० -*आव* प्रत्यय से बने संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | -*आव* पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *लग(-ना)* | +*आव* | *लगाव* |
| *बच(-ना)* | +*आव* | *बचाव* |
| *छिड़क(-ना)* | +*आव* | *छिड़काव* |
| *तन(-ना)* | +*आव* | *तनाव* |
| *घेर(-ना)* | +*आव* | *घेराव* |
| *खींच(-ना)* | +*आव* | *खिंचाव* |

इसी प्रकार — *कटाव, गलाव, ठहराव, चढ़ाव, चुनाव, जमाव, झुकाव, पड़ाव, पहनाव, बरताव, बहाव, भटकाव, भराव, रिझाव, सड़ाव*।

-*आवा* पुरुषवाची प्रत्यय
यह प्रत्यय भी-*आव* प्रत्यय की भांति कृदंत प्रत्यय है। इससे बनने वाले शब्द भी भाववाचक पुल्लिंग संज्ञाएँ होते हैं (देखिए तालिका २१)।

तालिका २१ -*आवा* प्रत्यय से बने पुल्लिंग संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | - *आवा* पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *बुला(-ना)* | + *आवा* | *बुलावा* |
| *भूल(-ना)* | + *आवा* | *भूलावा* |
| *बहक(-ना)* | + *आवा* | *बहकावा* |
| *पहन(-ना)* | + *आवा* | *पहनावा* |
| *पछता(-ना)* | + *आवा* | *पछतावा* |

इसी प्रकार: *चलावा, छलावा, चढ़ावा, दिखावा* ।

-*पन* एवं -*पा* पुरुषवाची प्रत्यय

इस भाववाचक तद्धित प्रत्यय से भाववाचक पुल्लिंग शब्द बनते हैं (देखिए तालिका २२)।

तालिका २२ -*पन* प्रत्यय से बने पुल्लिंग संज्ञा शब्द

| शब्द | -*पन* एवं -*पा* पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *काला* | +*पन* | *कालापन* |
| *बाल* | +*पन* | *बालपन* |
| *बच्चा* | +*पन* | *बचपन* |
| *पागल* | +*पन* | *पागलपन* |
| *एकाकी* | +*पन* | *एकाकीपन* |
| *लचीला* | +*पन* | *लचीलापन* |
| *बूढ़ा* | + *पा* | *बुढ़ापा* |
| *मोटा* | + *पा* | *मोटापा* |

इसी प्रकार -*पन* प्रत्यय जुड़े हुए संज्ञा शब्दों के अन्य उदाहरण द्रष्टव्य हैं:
*अंधापन, अजनबीपन, अक्खड़पन, अल्हड़पन, उपजाऊपन, ओछापन, कच्चापन, गंजापन, धुंधलापन,बाँझपन, लड़कपन, सयानापन* आदि।

-इ, -*ति* पुरुषवाची प्रत्यय

यह कृदंत प्रत्यय हैं जो संस्कृत धातुओं में जुड़कर तत्सम प्राणिवाचक शब्द बनाते हैं। इनकी संख्या कम है (देखिए तालिका २३)।

तालिका २३ -इ कृदंत प्रत्यय से बने पुल्लिंग संज्ञा शब्द

| मूल शब्द (संस्कृत धातु) | -इ पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (प्राणिवाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *कप्* | +इ | *कपि* |
| *कू* | +इ | *कवि* |
| *मुन्* | +इ | *मुनि* |
| *पा* | +*ति* | *पति* |

व्याकरणिक पर्यायवाची पुरुषवाची एवं स्त्रीवाची शब्द

*-ना* पुरुषवाची एवं *-Ø* (*शून्य* ) स्त्रीवाची प्रत्यय

*-ना* कृदंत प्रत्यय से युक्त क्रियार्थक संज्ञा (Infinitive) पुल्लिंग होती है। इन्हीं क्रियार्थक संज्ञाओं में जुड़े *-ना* प्रत्यय की जगह *-Ø* प्रत्यय लगने से अर्थात क्रिया के धातु रूप के समान जो भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं, वे कुछ थोड़े अपवादों को छोड़कर (जैसे *जोड़-तोड़*) सभी स्त्रीलिंग होती हैं। उदाहरण के लिए: *जाँचना, लूटना, महकना, डाँटना* आदि क्रियार्थक संज्ञाएँ पुल्लिंग हैं, जबकि *लूट, महक, डाँट* भाववाचक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग हैं।

नीचे कुछ क्रियार्थक संज्ञाओं एवं *-ना* प्रत्यय लोप के उदाहरण दिए जा रहे हैं।

जहाँ क्रियार्थक संज्ञा पुल्लिंग है, वहीं *-ना* का लोप होकर *-शून्य* (*-Ø*) लगी भाववाचक संज्ञाएँ स्त्रीलिंग हैं (देखिए तालिका २४)।

तालिका २४ प्रत्यय *-ना* के लोप से बने संज्ञा शब्द

| *-ना* युक्त मूल शब्द (क्रियार्थक संज्ञा) | लिंग | *-ना* लोप एवं *-Ø* जुड़ने से निर्मित संज्ञा शब्द | परिवर्तित लिंग |
|---|---|---|---|
| *जाँचना* | पुल्लिंग | *जाँच* | स्त्रीलिंग |
| *लूटना* | पुल्लिंग | *लूट* | स्त्रीलिंग |
| *पहुँचना* | पुल्लिंग | *पहुँच* | स्त्रीलिंग |
| *उछलना-कूदना* | पुल्लिंग | *उछल-कूद* | स्त्रीलिंग |
| *फटकारना* | पुल्लिंग | *फटकार* | स्त्रीलिंग |
| *डाँटना-डपटना* | पुल्लिंग | *डाँट-डपट* | स्त्रीलिंग |

इसी प्रकार के निम्नलिखित शब्दों के जोड़ों में पहले क्रियार्थक संज्ञा (पुल्लिंग) आती है, इसके बाद इससे निर्मित *-Ø* प्रत्यय वाली संज्ञा (स्त्रीलिंग):

*चमकना – चमक, समझना – समझ, छींकना – छींक, पूछना – पूछ, फाँसना – फाँस, छापना – छाप, रगड़ना – रगड़, दौड़ना – दौड़, महकना – महक, चहकना – चहक* ।

## २.३ मूलतः अरबी-फ़ारसी के स्त्रीवाची और पुरुषवाची प्रत्यय

हिंदी में कुछ अरबी-फ़ारसी प्रत्ययों का प्रयोग हो रहा है, जो स्त्रीवाची और पुरुषवाची प्रत्यय के रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं। इनके आधार पर भी लिंग निर्धारण संभव है।

अरबी-फ़ारसी के कुछ स्त्रीवाची प्रत्यय

*-इश* स्त्रीवाची प्रत्यय

*-इश* प्रत्यय लगे शब्द भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञाएँ हैं (देखिए तालिका २५)।

तालिका २५ *-इश* प्रत्यय से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | *-इश* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *कोश* | *+इश* | *कोशिश* |
| *गुज़ार* | *+इश* | *गुज़ारिश* |
| *नाला* | *+इश* | *नालिश* |
| *पैदा* | *+इश* | *पैदाइश* |
| *साज़* | *+इश* | *साज़िश* |

इसी प्रकार: *गरदिश, नुमाइश, आज़माइश, बंदिश, मालिश* ।

-ई स्त्रीवाची प्रत्यय

-ई प्रत्यय से युक्त शब्द भाववाचक संज्ञाएँ हैं (देखिए तालिका २६)। थोड़े अपवाद हैं, जैसे समूहवाचक संज्ञा *आबादी* (< *आबाद+ई*)।

तालिका २६ *-ई* प्रत्यय से बने भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | *-ई* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *दूर* | *+ई* | *दूरी* |
| *ईमानदार* | *+ई* | *ईमानदारी* |
| *चालाक* | *+ई* | *चालाकी* |
| *गुलाम* | *+ई* | *गुलामी* |
| *ज़बरदस्त* | *+ई* | *ज़बरदस्ती* |

इसी प्रकार— *चापलूसी, मजबूरी, मंज़ूरी, माफ़ी, वीरानी, शायरी, शैतानी, होशियारी, सख़्ती, हाज़िरी, शौक़ीनी*।

*-गी* स्त्रीवाची प्रत्यय

*-गी* प्रत्यय स्त्रीवाची भाववाचक प्रत्यय है। यह प्रत्यय बहुधा विशेषण शब्दों में जुड़ता है (देखिए तालिका २७)।

तालिका २७ *-गी* प्रत्यय से बने भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | *-गी* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *जिन्दा* | *+गी* | *जिंदगी* |
| *नाराज* | *+गी* | *नाराजगी* |
| *नापसंद* | *+गी* | *नापसंदगी* |
| *संजीदा* | *+गी* | *संजीदगी* |

इसी प्रकार: *आवारगी, बंदगी, शर्मिंदगी, मरदानगी, ख़ानगी, सादगी* ।

*-गीरी* स्त्रीवाची प्रत्यय (निम्नलिखित पुरुषवाची प्रत्यय *-गीर* देखिए।)
इस संयुक्त प्रत्यय के दो भाग हैं: *-गीर* एवं *-ई* । *-ई* वही प्रत्यय है जो ऊपर दिखाया जा चुका है, जैसे *दूर–दूरी* में ।

*-गीर* कृदंत प्रत्यय है जो फ़ारसी क्रिया से बना हुआ है। इसका शाब्दिक अर्थ है 'लेता हुआ', 'लेने वाला'। इससे भारत-आर्य एवं फारसी मूल के संज्ञा शब्दों से भाववाचक (व्यवसायवाचक ) संज्ञाएँ बनती हैं (देखिए तालिका २८)।

तालिका २८ *-गीरी* प्रत्यय से बने भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

| शब्द | *-गीरी* (< -गीर+-ई) स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक व्यवसायवाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *बाबू* | *+गीरी* | *बाबूगीरी* |
| *गुंडा* | *+गीरी* | *गुंडागीरी* |
| *नेता* | *+गीरी* | *नेतागीरी* |
| *राह* | *+गीरी* | *राहगीरी* |
| *मुंशी* | *+गीरी* | *मुंशीगीरी* |

इसी प्रकार: *दाईगीरी, बढ़ईगीरी, राजगीरी* ।

*-अत* स्त्रीवाची प्रत्यय
यह प्रत्यय भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञाएँ बनाता है, यथा:

| शब्द | *-अत* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *खिलाफ़* | *+ अत* | *खिलाफ़त* |

*-अत* प्रत्यय मूलतः एक अरबी व्युत्पादक संरचना का अंश है। हिंदी में यह व्युत्पादक प्रक्रिया स्पष्ट रूप से दिखाना अधिकतर शब्दों को लेकर मुश्किल है। इस लिए नीचे दिए गए शब्दों में *-अत* प्रत्यय जुदा न लिखकर इसको सिर्फ़ चिह्नित किया गया है। *सदाकत, शराफ़त, हिमाकत, लियाकत, शरारत* आदि।

*-इयत* स्त्रीवाची प्रत्यय
यह अरबी प्रत्यय शब्द में जुड़कर भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा बनाता है। अधिकतर यह अरबी मूल के विशेषणों में जुड़ता है (देखिए तालिका २९)।

तालिका २९ -*इयत* प्रत्यय से बने भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

| शब्द | -*इयत* स्त्रीवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक एवं वस्तुवाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *असल* | + *इयत* | *असलियत* |
| *ख़ास* | + *इयत* | *ख़ासियत* |
| *मनहूस* | + *इयत* | *मनहूसियत* |
| *मासूम* | + *इयत* | *मासूमियत* |
| *महरूम* | + *इयत* | *महरूमियत* |
| *इंसान* | + *इयत* | *इंसानियत* |
| *अंग्रेज* | + *इयत* | *अंग्रेज़ियत* |
| *क़ब्ज़* | + *इयत* | *क़ब्ज़ियत* |

अरबी-फ़ारसी के कुछ पुरुषवाची प्रत्यय

-*आक* पुरुषवाची प्रत्यय

इस प्रत्यय से भाववाचक एवं वस्तुवाचक स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द बनते हैं (देखिए तालिका ३०)।

तालिका ३० -*आक* प्रत्यय से बने स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

| शब्द | -*आक* पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (वस्तुवाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *ख़ूर* | + *आक* | *ख़ुराक* |
| *पोश* | + *आक* | *पोशाक* |

-*आना* पुरुषवाची प्रत्यय

यह प्रत्यय संज्ञा शब्दों में जुड़कर अधिकतर भाववाचक एवं कभी-कभी समूहवाचक संज्ञाएँ बनाता है (देखिए तालिका ३१)।

तालिका ३१ -*आना* प्रत्यय से बने स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | -*आना* पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (भाववाचक एवं समूहवाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *घर* | + *आना* | *घराना* |
| *नज़र* | + *आना* | *नज़राना* |
| *मेहनत* | + *आना* | *मेहनताना* |
| *हरज* | + *आना* | *हरजाना* |
| *यार* | + *आना* | *याराना* |

-*गार* पुरुषवाची प्रत्यय

यह प्रत्यय संज्ञा शब्दों में जुड़कर भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञाएँ बनाता है (देखिए तालिका ३२)।

तालिका ३२ *-गार* प्रत्यय से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | *-गार* पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (जातिवाचक एवं भाववाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *याद* | + *गार* | *यादगार* |
| *रोज़* | + *गार* | *रोज़गार* |

*-गीर* पुरुषवाची प्रत्यय (ऊपर लिखित स्त्रीवाची प्रत्यय *-गीरी* देखिए)
इस प्रत्यय से पुल्लिंग जातिवाचक संज्ञाएँ बनती हैं (देखिए तालिका ३३)।

तालिका ३३ *-गीर* प्रत्यय से बने संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (पुल्लिंग जातिवाचक संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *उठाई* | +*गीर* | *उठाईगीर* |
| *आलम* | +*गीर* | *आलमगीर* |
| *जहान* | +*गीर* | *जहाँगीर* |
| *राज* | +*गीर* | *राजगीर* |
| *राह* | +*गीर* | *राहगीर* |

*-ची* पुरुषवाची प्रत्यय
यह प्रत्यय संज्ञाओं में लगकर जातिवाचक-कर्तृवाचक संज्ञाएँ बनाता है। *-ची* मूलत: तुर्की प्रत्यय है। हिंदी में यह फ़ारसी से होकर आया (तिवारी 2016: 329) (देखिए तालिका ३४)।

तालिका ३४ *-ची* प्रत्यय से बने संज्ञा शब्द

| मूल शब्द | *-ची* पुरुषवाची प्रत्यय | निर्मित शब्द (जातिवाचक—कर्तृवाचक—संज्ञाएँ) |
|---|---|---|
| *अफ़ीम* | + *ची* | *अफ़ीमची* |
| *बंदूक* | + *ची* | *बंदूकची* |
| *खज़ाना* | + *ची* | *खज़ानची* |
| *मशाल* | + *ची* | *मशालची* |
| *नक़ल* | + *ची* | *नक़लची* |
| *तोप* | + *ची* | *तोपची* |

## ३ निष्कर्ष

प्रस्तुत आलेख के द्वारा व्यावहारिक रूप से संज्ञाओं का व्याकरणिक लिंग पहचानने का प्रयास किया गया है।
व्यावहारिक रूप इसलिए कहना उपयुक्त है कि इसे सिद्धांत नहीं कह सकते क्योंकि सिद्धांत तो सिद्ध होता है परंतु मेरा प्रयास हिंदी के प्रयोक्ताओं के लिंग निर्धारण संबंधी समस्याओं को कुछ हद तक कम करना है।

उपर्युक्त प्रत्ययों में कुछ महत्वपूर्ण स्त्रीवाची एवं पुरुषवाची प्रत्ययों के उदहारण दिए गए हैं। इनमें कुछ कृदंत प्रत्यय हैं, कुछ तद्धित प्रत्यय तथा कुछ कृदंत एवं तद्धित दोनों रूपों में प्रयुक्त प्रत्यय। इनमें भारतीय-आर्य भाषाओं एवं फार्सी-अरबी मूल के प्रत्यय हैं।

## संदर्भ सूची

गुरु, कामता प्रसाद 1920. *हिंदी व्याकरण*. काशी: नागरी प्रचारिणी सभा.
तिवारी, उदयनारायण 2016 [1950]. *हिंदी भाषा का उद्गम और विकास*. दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन.
पाण्डेय, अनिल कुमार 2010. “हिंदी में प्रत्यय विचार (लिंग निर्धारण के विशेष संदर्भ में)”, *भाषा* 49,3. नई दिल्ली: केंद्रीय हिंदी निदेशालय.